पाठ - 4
वुज़ू का बयान

الدرس الرابع - هندي
الوضوء

वुज़ू के बिना नमाज़ क़ुबूल नहीं होती है। अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

«لَا يَقْبَلُ اللهُ صَلَاةَ أَحَدِكُمْ إِذَا أَحْدَثَ حَتَّى يَتَوَضَّأَ» जब तुम में से कोई बेवुज़ू हो जाता है तो अल्लाह तआला उस की नमाज़ उस वक्त तक क़ुबूल नहीं करता जब तक दोबारा वुज़ू न कर ले (बुख़ारी 6954 मुस्लिम 225) वुज़ू की फ़ज़ीलत बहुत ज़्यादा है। इंसान को चाहिए कि उन्हें समझे। उन्हीं फ़ज़ीलतों में से एक फ़ज़ीलत इस हदीस में आयी है जिसे उस्मान बिन अफ़्फ़ान रजियल्लाहु अन्हु ने उल्लेख किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

مَنْ تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ الْوُضُوءَ خَرَجَتْ خَطَايَاهُ مِنْ جَسَدِهِ، حَتَّى تَخْرُجَ مِنْ تَحْتِ أَظْفَارِهِ

जो व्यक्ति अच्छी तरह वुज़ू करता है तो उसके गुनाह उसके शरीर से निकल जाते हैं, यहां तक कि उसके नाखून के नीचे से भी निकल जाते हैं (सही मुस्लिम 245)

उस्मान रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाःअल्लाह ने जिस तरह से आदेश दिया है यदि कोई उस तरह से वुज़ू करता है तो फ़र्ज़ नमाज़ें अपने बीच के गुनाहों का कफ़्फ़ारा होंगी, (सही मुस्लिम 231)

वुज़ू का तरीका

1. इंसान अपने दिल से वुज़ू की नीयत करे। नीयत के शब्द ज़बान से अदा न करे। नीयत दिल के इरादे को कहते हैं। उसके बाद **बिस्मिल्लाह** कहे।
2. फिर तीन बार अपनी हथेलियों को धोए।
3. उसके बाद कुल्ली करे और तीन बार नाक में पानी चढ़ाए।
4. फिर चौड़ाई में एक कान से दूसरे कान तक और लम्बाई में बाल उगने की जगह से ठूरी के नीचे तक धुले।
5. उसके बाद तीन बार अपने हाथों की उंगलियों के सिरे से कोहनी समेत धोये पहले दाया हाथ और फिर बायां हाथ धोये,
6. फिर एक बार अपने सिर का मसह करे। इंसान अपना हाथ भिगोए और अपने हाथ को सिर के शुरु हिस्से से अखीर तक ले जाए और फिर शुरु सिर पर वापस लाए।
7. फिर अपने दोनों कानों का एक बार मसह करे। अपनी उंगुली को कान के अन्दर डाले और अंगूठे से कान के ऊपरी हिस्से का मसह करे।
8. उसके बाद तीन बार अपने पांव को उंगुलियों के सिरे से टखनों समेत धोये। पहले दायां पांव धोये फिर बायां पांव धोये।
9. उसके बाद यह दुआ पढ़नी मुस्तहब है। أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ

अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह, व अशहदु अन्न मुहम्मदन अबदुहू वरसूलुह,

उमर बिन ख़त्ताब रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जो कोई इंसान अच्छी तरह वुज़ू करता है और फिर यह दुआ पढ़ता है, तो उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। जिस दरवाज़े से चाहेगा वह दाखिल होगा (मुस्लिम, 234)